Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

पंडित माखनलाल चतुर्वेदीजी के विचारों पर महात्मा गांधीजी के सिध्दांतो का प्रभाव

शोधार्थी प्रो. डॉ. शैलेंद्र कुमार शुक्ला, नयना मार्टीन थोरात
सरदार पटेल महाविद्यालय, चंद्रपूर

सारांशः-

प्रस्तुत शोध-पत्र के अंतर्गत माखनलाल चतुर्वेदीजी के साहित्य तथा उनकी विचारधारा पर महात्मा गांधीजी के गांधीवादी विचारों का प्रभाव एवम् परिणाम का विस्तारपूर्वक उध्ययन करने की कोशिश की गयी है। गांधीवाद के मूल तत्व-अहिंसा, स्वदेशी, सत्य, आत्मबलिदान, जनजागरण एवम् नैतिकता को बुनियाद मानकर ये अध्ययन किया जा रहा है कि, पंडीत माखनलालजी के काव्य, पत्रकारिता तथा विचारों में इन सारे तत्वों की अभिव्यक्ती इस शोधपत्र में की गयी है । इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य ये सिध्द करता है कि, पंडीत जी का साहित्य मात्र राष्ट्रीय भावना का प्रकटीकरण नहीं है, बल्की गांधीवादी चिंतन-मनन का भी साहित्यिक रुपांतरण है। इस शोधपत्र के अध्ययन के माध्यम से संसार से ऱ्हास होते जा रहे नैतिक मुल्य, सत्य, अहिंसा स्वदेशी के प्रती कर्तव्य निष्ठा, आत्मबलिदान आदि मुल्यों को पुन्हा: प्रस्थापित करने में सहाय्यक साबित होंगे।

प्रस्तावना :-

माखनलालजी हिन्दी साहित्य जगत के प्रमुख राष्ट्रकवि, पत्रकार तथा स्वतंत्रता सैनानी की भूमिका भी अदा करने वाले कर्तव्यनिष्ठ, साहित्यकार थे पंडितजी का साहित्य मात्र काव्य-सौंदर्य तक सिमटा नही था, बल्कि उनके साहित्य में राष्ट्रीय चेतना, नैतिक आदर्श एवम् सामाजिक उत्तरदायित्व की गहन छाप हमें देखने को मिलती है। जिस ऐतिहासिक समय में उन्होंने लेखन कार्य किया, वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का, गुलामी से मुक्ती पाने के लिए आवाज उठाने वाला काल था । इसी कालखंड में गुलामी की जंजीरों से जकडे भारतीय समाज के उत्थान के लिए, वैचारिक एवम् सांस्कतिक निर्माण में महात्मा गांधीजी के सकारात्मक विचारों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही गांधीजी के सत्य, स्वदेशी, अहिंसा, आत्मबलिदान तथा नैतिकता का जीवन आदि तत्वों ने न केवल राजनीति को प्रभावित किया, बल्कि संस्कृती व साहित्य के क्षेत्र को भी नये विचार, नयी दिशा देने का कार्य किया ।

माखनलालजी के काव्य और विचारों में गांधीवादी मूल्यों की स्पष्ट छाप देखते मिलती है । पंडित जी के साहित्य में राष्ट्रप्रेम, त्याग, नैतिकता तथा जनसेवा की जो भावना मिलती है वह गांधीवादी जीवन-दृष्टी से गहनता से जुडी हुई प्रतीत होती है। पंडित जी ने कविताओं और पत्रकारिता को माध्यम बनाकर भारतीय

समाज में जनजागृती लाने का, स्वतंत्रता पाने के लिए प्रेरणा देने, एवम् नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया है ।

इस तरह से माखनलाल जी का साहित्य केवल राष्ट्रीय आंदोलन का साहित्यिक प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि यह गांधीवादी विचारधारा का सृजनात्मक रुप भी देखने मिलता है । प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य उनके विचारों और साहित्य में निर्दीष्ट गांधीवादी सिध्दोंतो के प्रभाव का विश्लेषण करना तथा गांधीवाद के चिंतन एवमं काव्य- दृष्टी को किस प्रकार प्रभावित किया तथा पंडित जी के गांधीवादी विचार आज के वर्तमान समाज में भी उपयुक्त हो सकते है ।

बिज शब्दः-

1. सिध्दांत - किसी भी विषय के बारे में कोई भी परिकल्पना या विचारों का समूह होता है, जो किसी भी प्रकार के तर्क
   के माध्यम से किसी भी प्रकार से बनता है।
2. आत्मबलिदान -किसी महान उद्देश्य, आदर्श कर्तव्य या दूसरों की भलाई के लिए अपनी इच्छाओं, हितो या प्राणों का
   स्वेच्छा से त्याग करना।
3. सृजनात्मक - कुछ नया, मौलिक और उपयोगी बनाने रचने या सोचने की मानसिक क्षमता ।
4. निर्दीष्ट - पहले से बतलाया हुआ, नियत, निश्चित या उल्लेखित किया हुआ ।
5. सर्वोपरी - सबसे उपर, सर्वश्रेष्ठ
6. जन-केंद्रीत -किसी भी नीति, विकास, कार्य या निर्णय के केंद्र में लोगों की जरुरतों, भलाई और भागीदारी को
   सर्वोच्च प्राथमिकता देना।
7. नैतिक-नीति - सम्मत, सदाचारी या सही-गलत के सिध्दांतो के अनुसार आचरण करना।
8. अगाथ-जिसके गहराई की शाह न मिल सके।
9. विश्लेषण - किसी जटिल विषय, पदार्थ या समस्या को बेहतर ढंग से समझाने के लिए इसे छोटे-छोटे भागों में विभाजित करके उनका सूक्ष्म और गहराई से अध्ययन करने की प्रक्रिया है।
10. अवहेलना- किसी बात, व्यक्ति या नियम को जानबूझकर नजर अंदाज करना।
11. आत्मसम्मान -स्वयं के महत्व, मूल्य और गरिमा को पहचानता और उसका सम्मान।
12. राष्ट्रउन्मुख -ऐसी सोच, कार्य या नीति जो देश के विकास, हित और उन्नति की दिशा में हो ।

विषय विस्तार :-

1) सत्य और अहिंसा का प्रभाव :-

गांधीवादी सिध्दांत का मूल आधार स्तंभ सत्य और अहिंसा है। पंडित जी की कविताओं में अन्याय के विरुध्द आवाज है, लेकिन वह हिंसात्मक नहीं बल्कि नैतिक शक्ति से प्रेरित है । वे संघर्ष को आवश्यक मानते थे, किन्तू उसमें नैतिकता और संयम का आग्रह करते थे। पंडित जी का यह दृष्टीकोण गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित करता है । पंडितजी युवा वर्ग को प्रोत्साहित करते थे, किन्तु उनका आग्रह आत्मबलिदान पर है, न कि हिंसा पर। पंडित जी मानते थे कि राष्ट्रनिर्माण का मार्ग नैतिक साहस से होकर जाता है।

2) त्याग और बलिदान की भावना :-

गांधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन को त्याग और आत्मबलिदान का स्वरुप दिया है। माखनलाल चतुर्वेदी जी की प्रसिध्द कविता "पुष्प की अभिलाषा" में बलिदान को महिमा-मंडित नहीं किया बल्कि उसे कर्तव्य के रुप में प्रस्तुत किया है । यह कामना गांधीजी के राष्ट्रप्रेम और सेवा-भाव से मेल-मिलाप खाती है। माखनलालजी की कविताओं में व्यक्तिगत स्वार्थ की जगह राष्ट्रहित सर्वोपरी है -जो गांधीवादी आदर्श का ही विस्तार देखने मिलता है।

ये सभी दृष्टीकोन गांधीजी के आत्मत्याग और सेवा-भाव के आदर्श से मेल-खाता दिखाई देता है। व्यक्तिगत अभिलाषाओं से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को प्रथम स्थान देना गांधीवाद की प्रमुख भावना है, जो पंडित जी के काव्य में स्पष्ट है।

3) स्वदेशी, राष्ट्रीय एवम् सांस्कृतिक चेतना :-

महात्मा गांधीजी ने स्वदेशी, राष्ट्रीय एवम् सांस्कृतिक चेतना पर जोर दिया है। साथ ही आत्मनिर्भरता पर दृष्टी लगाई थी । माखनलाल जी ने स्वयं की पत्रकारिता व साहित्य के माध्यम से परकीय शासन का घोर विरोध किया और भारतीय संस्कृति, भाषा और मूल्यों का समर्थन किया ।

पंडितजी की भाषा सरल, प्रभावशाली और जनमानस से जोडकर रखती है, ये भी एक गांधीजी के जन -केंद्रीत सोच का असर माना जाता है। गांधीजी ने स्वदेशी के आत्मसम्मान का प्रतीक माना था ।

4) नैतिकता तथा सामाजिक सुधार :-

गांधीवादी सिध्दांत केवल राजनीतिक विचारधारा नही है, बल्कि नैतिक जीवन-पध्दती है ।

पंडितजी के विचारों में नैतिक आदर्श, मानवमा एवम् सामाजिक समानता की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। वे

समाज में जागृती और सुधारणा करने के पक्षधर है।

5) पत्रकारिता में गांधीवादी प्रतिबध्दता :-

माखनलालजी की पत्रकारिता निष्ठा, निष्पक्ष साहसी तथा राष्ट्रोन्मुख है। उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से ब्रिटिश

प्रशासन की अवहेलना की और जन-समुह को जागृत करने का प्रयास किया था। पंडित जी का यह कार्य गांधीवादी सत्याग्रह की साहित्यिक अभिव्यक्ति कहा जा सकता है।

उपसंहारः-

पंडितजी हिन्दी साहित्य के ऐसे साहित्यकार है जिनके काव्य और विचारों में राष्ट्रीय चेतना, नैतिक मुल्य और मानवीय आदर्शो का अद्‌भूत सामज्यस्य दिखाई देता है। पंडितजी का साहित्य ऐसे ऐतिहासिक समय में विकसित हुआ जब भारत स्वतंत्रता आंदोलन के दौर से जा रहा था और देश के राजनीतिक एवम् सामाजिक जीवन पर महात्माजी के विचारों का गहरा असर था। गांधीवादी के सिध्दांत होने सत्य अहिंसा, स्वदेशी त्याग और नैतिक जीवन ने भारतीय समाज के साथ-साथ साहित्यकारों के विचारों को भी प्रभावित किया है। माखनलाल जी के विचारों और साहित्य में इन गांधीवादी आदर्शो की स्पष्ट छवी देखने मिलती है।

चतुर्वेदी जी के काव्य में राष्ट्रप्रेम और मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना अत्यंत सुदृढ है। यह भावना महात्माजी के राष्ट्रसेवा और आत्मबलिदान के आदर्शो से प्रेरित दिखाई देती थी । उनकी कविताओं में व्यक्ति को अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्टहित के लिए समर्पित होने का उत्साह भर देती है। यह विचार गांधीवादी चिंतन का ही विस्तार है, जिसमें राष्ट्रसेवा को नैतिक कर्तव्य माना गया था।

इसी प्रकार से पंडित जी के साहित्य में सत्य तथा नैतिकता का अहम महत्व दिखाई देता है। गांधीजी ने सत्य को जीवन का सर्वोच्च मूल्य माना था और उसी के आधार पर सत्याग्रह का तत्व प्रस्तुत किया है। चतुर्वेदी जी ने भी अपने काव्य और लेखन में सत्य के पक्ष में दृढता से आवाज उठाई तथा अन्याय और अत्याचार का विरोध किया था। उनका विरोध अहिंसा के सिध्दांत से मेल खाता है।

पंडितजी की पत्रकारिता में भी गांधीवादी सिध्दातों का असर स्पष्ट रुप से देखने मिलता है। माखनलाल जी ने अपने लेखों और संपादकीयों के माध्यम से जनता में राष्ट्रीय चेतना का प्रचार-प्रसार किया और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति लोगों को जागृत तथा प्रेरित किया था। पंडितजी की लेखनी समाज में जागृति तथा नैतिक साहस उत्पन्न करने का माध्यम बनी। इस प्रकार उनकी पत्रकारिता को भी गांधीवादी विचारधारा का विस्तार माना जाता है।

सांस्कृतिक दृष्टी से भी पंडित जी ने भारतीयता और स्वदेशी भावना को महत्व दिया है। गांधीजी की तरह वे भी भारतीय संस्कृती, भाषा और मुल्यों को राष्ट्रनिर्माण का आधार मानते है। उनकी रचनाओं में भारतीय समाज के प्रति गहरा विश्वास और सांस्कृतिक गौरव की भावना अभिव्यक्त होती थी।

अत: समग्र रुप से कहा जा सकता है कि माखनलालजी के विचारों और साहित्य में गांधीवादी दर्शन का गहन और व्यापक प्रभाव दिखाई देता था। उन्होंने गांधीजी के आदर्शो को केबल सैधांतिक रुप में नही अपनाया है बल्कि उन्हें अपने जीवन साहित्य और पत्रकारिता में व्यवहारीक रुप से भी अभिव्यक्त किया है। यही कारण है कि उनका साहित्य केवल अपने समय का दस्तावेज नहीं है, किन्तु आज भी नैतिकता, राष्ट्रप्रेम एवम् मानवता की प्रेरणा देने वाला अमूल्य स्त्रोत बना है।

निष्कर्ष :-

माखनलालजी हिन्दी साहित्य के ऐसे अहम साहित्यकार है जिनके व्यक्तित्व एवम् कृतित्व में राष्ट्रीय चेतना, नैतिकता तथा मानवीय आदर्शो का गहन सामजस्य देखने मिलता है। माखनलालजी का साहित्य उस समय में विकसित हुआ जब भारत में स्वतंत्रता का युध्द अपने चरम सिमा पर पहूँचा था और समाज में व्यापक राजनीतिक एवम् सांस्कृतिक बदलाव हो रहे थे। इसी युग में महात्मा गांधी के कार्यो व विचारों ने भारतीय जनसमुदाय एवम् उनके अंर्तमन को काफी अंतल से प्रभावित किया था। गांधीजी के सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, त्याग और नैतिक जीवन जैसे सिध्दांतो ने सिर्फ राजनीति ही नही, बल्कि साहित्य, समाज और संस्कृति को भी नयी दिशा प्रधान करते दिखाई देते है।

महात्मा गांधी जी जब आजादी की लडाई को जनआंदोलन बना रहे थे, तब मध्य भारत में माखनलालजी ने अपने समाचार पत्र 'कर्मवीर' के माध्यम से आजादी और नवजागरण की आग लगा दी थी। माखनलालजी के साहित्य में सत्य और नैतिकता का भी विशेष महत्व था। गांधीजी ने भी सत्य को जीवन का सर्वोच्च स्थान माना और उसी के आधार पर सत्याग्रह की संकल्पना उन्होने प्रस्तूत की थी। चतुर्वेदी जी ने भी अपने साहित्य में सत्य के प्रति अटूट विश्वास अभिव्यक्त किया एवम् अन्याय और अत्याचार के विरुध्द नैतिक साहस के साथ आवाज शीर्ष को उनकी टक्कर हिंसा या आक्रमकता पे आधारित नही थी, बल्कि नैतिक शक्ति और आत्मबल पर आधारीत थी, जो गांधीवादी अहिंसा के सिध्दांत से मेल खाती थी।

सांस्कृतिक दृष्टी से भी चतुर्वेदी जीने भारतीयता और स्वदेशी भावना को विशेष महत्व दिया था। गांधीजी की तरह माखनलाल जी भी भारतीय भाषा, संस्कृति और परंपराओं को राष्ट्रनिर्माण का आधार मानते थे । अंत: समग्र रुप से कहा जा सकता कि, माखनलाल चतुर्वेदीजी के विचारों और साहित्य में गांधीवादी दर्शन का अगाध असर दिखने मिलता है। चतुर्वेदीजी ने महात्माजी के सिध्दांतो-सत्य, अहिंसा, त्याग और स्वदेशी की

अपने काव्य और पत्रकारिता के माध्यम से समाज के समाने कथित किया था। इस प्रकार उनका साहित्य केवल स्वतंत्रता आंदोलन की भावनाओं की परछाई नही है, बल्कि वह गांधीवादी विचारधारा का सशक्त साहित्यिक रुप भी दिया है।

माखनलाल जी का साहित्य आज के वर्तमान समाज में अत्यंत प्रासंगिक है। चतुर्वेदीजी के विचार और रचनाएँ समाज को नैतिकता, राष्ट्रप्रेम, मानवता और आदर्श जीवन की प्रेरणा देते है। इसी कारण कहा जा सकता कि उनका साहित्य भारतीय साहित्यिक परंपरा में एक स्थायी एवम् प्रेरणादायी स्थान रखता रहेंगा।

संदर्भ ग्रंथ :-

1) माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व - डॉ. कृष्णदल पालीवाल
2) माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का अध्ययन- रामविलास शर्मा
3) माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य और विचार - डॉ. शिवकुमार मिश्र
4) हिंद स्वराज्य - महात्मा गांधी
5) सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा - महात्मा गांधी
6) गांधीवाद : सिध्दांत और व्यवहार - डॉ. रामजी सिंह
7) हिंदी साहित्य का इतिहास - रामचंद्र शुल्क
8) हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास- रामविलास शर्मा
9) आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र
10) समकालीन भारतीय साहित्य - (साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित)
11) साहित्य संदेश
12) इंटरनेट